कोंकणी साहित्य

प्रो. रवींद्रनाथ मिश्र

वर्ष 2011 में प्राथमिक स्तर पर शिक्षा के माध्यम को लेकर गोवा में आंदोलन का ज़ोर रहा। यहाँ समाज का एक बड़ा तबका आधुनिक तकनीकी विकास को ध्यान में रखकर अपने बच्चों के लिए अंग्रेजी माध्यम की शिक्षा पर जोर दे रहा था तो वहीं पर दूसरा वर्ग अपनी सांस्कृतिक विरासत एवं जमीनी अस्मिता को बचाए रखने के लिए कोंकणी और मराठी माध्यम की शिक्षा को कायम रखने के लिए प्रतिबद्ध था। इस तरह पूरे वर्ष भर भाषा का विवाद प्रमुख रूप से छाया रहा। वस्तुतः जब इस तरह का कोई मुद्दा उठता है, तो उसके केंद्र में राजनीति का प्रवेश हो ही जाता है और उसमें किसी–न–किसी रूप में धर्म एवं संप्रदाय का हस्तक्षेप भी होता है, यहाँ भी कुछ ऐसा ही हुआ। चूँकि कोंकणी भाषा का सवाल था इसलिए कोंकणी रचनाकार भी उससे आंदोलित रहे। मैं विगत कई वर्षों से कोंकणी साहित्य सर्वेक्षण संबंधी लेख लिख रहा हूँ लेकिन इस वर्ष मुझे कोंकणी साहित्य लेखन को लेकर निराशा हुई क्योंकि अपेक्षित साहित्य सर्जन नहीं हुआ।

वैसे तो सभी भारतीय भाषाओं में साहित्य सर्जन विपुल मात्रा में हो रहा है, लेकिन उसकी गुणवत्ता की बात तो पाठकों के मन में कहीं–न–कहीं तो खटकती जरूर है। यह बात जीवन के लगभग सभी क्षेत्रों में महसूस की जा रही है। अब जीवन की संवेदनात्मक जीवनानुभूतियों की गहराई साहित्य में पहले जैसी नहीं आ रही है क्योंकि संवदेनाओं के स्वरूप में भी अंतर आया है। यहाँ मैं सबसे पहले कोंकणी काव्य विधा की जानकारी देना चाहता हूँ।

कोंकणी काव्य–जगत : गोवा मुक्ति पूर्व से लेकर आजतक कोंकणी काव्य धारा का वैविध्य रूप प्रवाहित होता रहा है। इस विधा के माध्यम से यहाँ के कोंकणी कवियों ने विविध विषयों पर अपने संवेदनात्मक मनोगत भावों को व्यक्त किया। इधर की कविताएँ विशेष रूप से किसी एक विषय को न लेकर रोजमर्रा के जीवन से जुड़ी हुई अनुभूतियों को लेकर लिखी गईं। विगत 25 वर्षों से कोंकणी भाषा और साहित्य के विकास के प्रति सक्रिय भूमिका का निर्वाह करने वाले विनायक गोवेंकर का 71 कविताओं का संग्रह *अंतगणित* आया। संग्रह की शीर्षक कविता में कवि ने जीवन का क्या अर्थ है? इस विचार को बड़ी बखूबी से चित्रित किया है।

उदेंतकडल्यान अस्तमतेकडेन
धांव मारपी एके
घोणीन
रस्त्या कुशीक
घाणींतले किडी सोदपी
कोंबडेचें एक पील
सकयल येवन उखल्लें।

सुफला रूद्राजी गायतोंडे का याद, येतलो म्हूण, घाय, भेट पयली वयली, तुजे खातीर, तूंच जाय... दुख्ख, वालोर, रेकाद, कसलो न्याय तुझी जीण आदि शीर्षक से 88 कविताओं का संग्रह *आम्रपाली* नाम से प्रकाशित हुआ। इसमें उनके अनुभव के विविध रंग हैं।

विल्फी रेबिंबस का *गीत अपनी कवित* नामक पुस्तक के दो भाग हैं। भाग एक : गीत में कुल 65 गीत और भाग दो : कविता में 20 कविताएँ संकलित हैं। कवि धार्मिक भावना से ओत–प्रोत होकर इस संसार की निस्सारता का बयान करते हुए कहता है कि हमें सत्य का साथ देते हुए चिंता नहीं करनी चाहिए। कहा भी गया है कि मनुष्य के लिए चिंता की अपेक्षा चिता कबूल है।

कवि ने अन्य गीत जयो कोंकण माता, कोंकणी आमची भास, नमान आवय तुका, बदलता संसार, नाच नरा, नाच नारी, चंदामामा, सांज जालीरे आदि हैं।

युवा कवि अमेय विश्राम नायक का तकनीकी संगणक की दुनिया के प्रभाव के फलस्वरूप *मोग डॉट कॉम* शीर्षक से 60 कोंकणी कविताओं का संकलन प्रकाशित हुआ। इसमें उन्होंने अपने मनोगत भावों को जीवन और जगत के नाना क्रियाकलापों को व्यक्त किया है। सृष्टि के विकास से ही प्रकृति हमारे जीवन की सहचरी रही है। बादल और वर्षा पर सभी भारतीय भाषाओं के कवियों ने कविताएँ लिखी हैं।

विल्फी रेबिंबस के काव्य संकलन *गीत आनी कवित* देवनागरी लिपि में लिखी गई कविताओं को कोंकणी में अनुवाद मेल्विन रोड्रिगस ने किया है। जिसमें भाग एक : गीतां में 65 कविताएँ कोंकणी जीवन और समाज तथा अन्य विषयों पर कवि के मनोनीत भाव पर आधारित हैं। प्रस्तुत काव्य संकलन दूसरा भाग : कविता शीर्षक से हैं, जिसमें 20 कविताएँ हैं।

एन. शिवदास मूलतः कोंकणी कहानीकार के रूप में विख्यात हैं। *भांगर साळ* कथासंग्रह पर आपको 2005 का साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ है। स्थानीय अन्य पुरस्कारों से सम्मानित एन. शिवदास ने नाटक एवं बाल साहित्य की भी रचना की है। *सार्थ–दुख्खार्थ* काव्य–संग्रह के प्रकाशन के साथ शिवदास ने कोंकणी साहित्य की लगभग सभी विधाओं पर लेखनी चलाई है। प्रस्तुत काव्यसंग्रह में रोजमर्रा के जीवन की अनुभूतियों और परिवेशगत जीवन पर आधारित कुल 65 कविताएँ संकलित हैं। कवि *दुख्खाच्यो कविता* नामक शीर्षक की लंबी कविता में दुःख के विभिन्न रूपों का वर्णन करते हुए अंत में दुःख की आहुति देकर सुख और शांति की कल्पना करता है।

युवा कवयित्री अन्वेषा अरुणा सिंगबाळ *सुलूस* नामक काव्यसंग्रह की भूमिका में अपने मनोगत भावों को व्यक्त करती हुई लिखती हैं कि "जीवन के सुख–दुख, राग–विराग, उतार–चढ़ाव आदि के समय कविता ने हमारा सदैव साथ दिया है। *सुलूस* में उनकी साद, दोन दुकां, कसो?, शीण, देव, वाट, सर्वस्व, काणी, अस्तित्व आदि शीर्षक से कुल 66 कविताएँ संकलित हैं।

कवयित्री शीतल साळगांवकार ने भी जीवन के विभिन्न रोजमर्रा के अनुभवों और सुखात्मक एवं दुखात्मक पहलुओं को अपने काव्यसंग्रह *जायां पुडो* में व्यक्त किया है। इसमें कुल 82 कविताएँ हैं

युवा कवयित्री सुश्री श्रीनिशा एकनाथ नायक ने *पिंपळा पानां* नामक काव्य पुस्तिका में पीपल के पत्तों पर एक लंबी कविता लिखी है। इसमें पीपल के स्वरूप को इंगित करते हुए अपने मनोभावों को व्यक्त किया है।

कथा साहित्य : उपन्यास और कहानी कोंकणी कथा साहित्य की प्रमुख विधा है। इस वर्ष विन्सी क्वाड्रोस के लंबी कहानियों के रोमन लिपि में MOLOO और AVAZ-DHON नामक दो कहानी–संग्रह प्रकाशित हुए। पहले कहानी–संग्रह में 13 और दूसरे में 19 कहानियाँ संकलित हैं। ये कहानियाँ गोवा के सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन पर आधारित हैं। *नशिबांत निर्मिल्लें कथा झेलो* नामक मूल रोमी लिपि में लिखे गए कहानी–संग्रह का अनुवाद विशाल खांडेपारकर ने कोंकणी में किया है। इस संग्रह में नशिबांत निर्मिल्लें, मोग मानिना जाती–काती, केल्ल्या मापान, सपन, रगताचो शाप, नागोवणेचें पेन्सांव, म्हजो अपराध और नवो पर्जळ घराब्याचो शीर्षक से कुल 8 कहानियाँ संकलित हैं।

नाट्य साहित्य : इसी वर्ष बेनिसियो वितोरीन पेरैरा का *दुडवांचो मोग* नामक दो अंकों का काव्य नाटक प्रकाशित है। यह गोवा के तियात्र पर लिखा गया प्रसिद्ध नाटक है। जिसे वर्ष 2008–09 में प्रथम पुरस्कार से नवाजा गया है। बोळंतूर कृष्ण प्रेम, बंटवाळ ने पौराणिक एवं महाभारत के चरित्रों पर आधारित कुल 7 नाटकों की रचना की है। प्रस्तुत मूल कन्नड़ *चंद्रहास* संगीत नाटक का प्रभू ने कोंकणी में और डॉ. गीता शेणै ने देवनागरी में अनुवाद किया है।

निबंध साहित्य : गोवा सरकार द्वारा कई पुरस्कारों से सम्मानित मीना काकोंडकार का *शब्दसूर* एवं डॉ. अनुपमा कुडचडकार का *बरे जिणेची कला* शीर्षक से क्रमशः 27 और 50 छोटे–छोटे निबंधों के दो संग्रह प्रकाशित हुए। पहले निबंध–संग्रह में *फुलपाखरांचो गाँव, टू सर विथ लव्ह, सोयरीं, पोट–घराबे, गणीत, तिळूगल* एवं दूसरे निबंध में *भुरगेंपण, संस्कार, मेकळीक, नितळसाण, वाड वडिलांची पुण्याय बदलती जीण सुवार्थ, आई तुका देव बरें करूं* आदि निबंधों में गोवा की सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन–शैली एवं परिवेशगत जीवन की झाँकी प्रस्तुत की गई है। *मातृ देवो भव* आवय म्हणचेच देव हैं आमी सगळींच जाणात, आवय आमचो पयलो गुरु, आवय भुरग्याचें जें

नातें आसता ताचे परस श्रेष्ठ अपनी घट्ट बांदिल्ले नातें जगत आनी खंयचेंच सांपडचे ना।

यात्रा एवं डायरी साहित्य : साहित्य अकादमी सम्मान से सम्मानित दिलीप बोरकार की *क्रिशम* पुस्तक कश्मीर की यात्रा–वर्णन पर आधारित है। जिसमें उन्होंने कश्मीर प्रवास के दौरान वहाँ नैसर्गिक सुषमा और वहाँ के जीवन–व्यापार का बड़ा ही मनोहारी चित्रण किया है। "फुलां सगळयांत चड कोणाक आवडटात? दादल्यांक काय बायलांक? हो प्रश्न खरें म्हळयार म्हाका पडूंक फाव नाशिल्ले। फुलां आवडनांत अशी एकूय व्यक्ती हे धर्तरेर आसत अशें म्हाका दिसना। हांवूय फुलपिसो। पूण म्हाका फुलां आवडप वेगळें आनी लोकांची आवड वेगळी। दिलीप बोरकार ने कोंकणी साहित्य की विभिन्न विधाओं को अपनी लेखनी से सजाया है और आज भी सर्जन की क्रिया में रत है। इस वर्ष *एक आंकवर डायरी* नामक रचना प्रकाशित हुई है। मेरी समझ से इस विधा में इनका यह पहला प्रयास है।

अन्य साहित्य : कोंकणी की प्रमुख विधाओं के अतिरिक्त अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्य का अनुवाद कोंकणी में और कोंकणी का अन्य भारतीय भाषाओं में प्रकाशित होते रहते हैं। माणिकराव गावणेकार ने जॉन बुनियान के मूल अंग्रेजी पुस्तक *भक्तराज* नाटक का कोंकणी में अनुवाद कर प्रकाशित किया। संस्कृत में भर्तृहरि कृत विख्यात शृंगारशतक, नीतिशतक और वैराग्य शतक रचनाओं का माणिकराव गावणेकार ने कोंकणी में अनुवाद प्रकाशित किया है।

इसके अतिरिक्त मधुसूदन बोरकार ने चिकित्सा से संबंधित *संमोहन : शास्त्र आनी उपचार* नाम से पुस्तक आई। जिसमें आज के बढ़ते हुए तनाव, कुंठा, संत्रास, घुटन, एकाकीपन आदि से उत्पन्न बीमारियों का जिक्र करते हुए उसके निदान का उपाय बताया गया है। चिकित्सा से संबंधित डॉ. उर्बा शिवदास नायक की *समूळ होमिओपैथी उपाय* पुस्तक में शरीर के विभिन्न अंगों संबंधी रोगों और उनके उपचार का जिक्र किया गया है। डॉ. आनंद हेळेकार ने डॉ. प्रेमानंद शां. रामाणी की मूल अंग्रेजी पुस्तक *तुमच्या कण्याची काळजी घेयात* का अनुवाद कोंकणी में प्रकाशित किया है। इसमें रोगों के लक्षण के साथ उनके उपचार के विविध रूपों का उल्लेख हुआ है। हमारे

भारत में योग साधना की परंपरा बहुत पुरानी रही है, जिसका कि बाबा रामदेव ने काफी प्रचार किया है। 'सुखी जीवन का मंत्र और तंत्र' यानी योग साधना के विभिन्न रूपों एवं उसके महत्व की सचित्र जानकारी डॉ. सीताकांत घाणेकर ने अपनी पुस्तक *योगसाधना* के माध्यम से दी है।

युवा कोंकणी कथाकार श्री प्रकाश पर्येकार ने गोवा में पर्यावरण की समस्या को दर्शाते हुए *म्हादय काळजांतल्यान* पुस्तक में मांडवी नदी के स्रोत, प्रवाह, जलप्रपात, वर्षा, जंगल, नदी के अंदर की वनस्पतियों, नदी के किनारे रहने वाले लोगों के मनोभावों एवं नदी के वर्तमान स्वरूप की विद्रुपता आदि का बड़ा ही सजीव चित्रण किया गया है।

गोवा कोंकणी अकादमी, गोवा ने रोमन लिपि में INGLEZ-KONKNNI (ROMI LIPI) UTRAVOLL नाम से प्रथम–खंड प्रकाशित किया है। अशोक कामत ने गोवा के कोंकणी रचनाकारों, लेखकों, कलाकारों, प्राध्यापकों की डायरेक्टरी तैयार की है। डॉ. एस. बी. कुलकर्णी की मूल मराठी पुस्तक *कोंकणी प्रकृति और परंपरा* का अंग्रेजी में अनुवाद श्रीनिवास कामत ने The Konkani Language Natural & Tradition नाम से किया है। इसमें कामत ने कोंकणी भाषा के स्वरूप को ऐतिहासिक परंपरा के आधार पर विवेचित किया है। सर्वेश चंद्रकांत भोसले ने गोवा के एक लोकप्रिय लोक वाद्य के स्वरूप और उसके विभिन्न प्रकारों का उल्लेख अपनी पुस्तक *डोब एक लोकवाद्य* में किया है। डॉ. कमलादेवी कुंकळयेंकार ने भारत, ग्रीक, यूरोप, इस्लाम, चीन आदि संसार के प्रमुख धर्म, दर्शन और विज्ञान के तत्वज्ञानियों और दार्शनिकों का एंक परिचयात्मक अध्ययन अपनी पुस्तक *संवसारीक तत्वगिन्यान इतिहास आनी वळख* में दिया है।

पत्र–पत्रिकाएँ : गोवा आर्थिक रूप से संपन्न होने के कारण यहाँ सड़क, बिजली और पानी की सुविधाएं गाँव के सुदूर अंचलों तक हैं। यही कारण है कि जनसंचार, मुद्रण एवं इलेक्ट्रानिक माध्यमों का प्रचार–प्रसार व्यापक पैमाने पर है। पर्यटक स्थल एवं मराठी तथा अन्य भाषा–भाषियों के प्रभाव के कारण अधिकांश पत्र–पत्रिकाएँ मराठी और अंग्रेजी में प्रकाशित होती है। कोंकणी का एक मात्र दैनिक समाचार–पत्र *सुनापरांत पणजी* से

प्रकाशित होता है। कोंकणी पत्रिकाओं की स्थिति यहाँ बहुत अच्छी है। प्रा. माधवी सरदेशाय एवं श्री दिलीप बोरकार के संपादकत्व में *जाग* और *बिंब* नामक मासिक पत्रिकाएँ नियमित प्रकाशित हो रही हैं। बिंब का अप्रैल, जून, जुलाई और सितंबर 2011 का अंक क्रमशः 'आतां सरकारान इंग्लीश माध्यमाचीय सवलत काडून घेवंची, *गोवा व्हिजन 2035*, भूरग्यांकूय तांचें स्वातंत्र्य आसता जल्माक घालतल्यांक ताचें भान नासता, गोंय मुक्तिच्या सुवर्ण महोत्सवी वर्साक सलाम! विषयों पर केंद्रित थे। 'जाग' कोंकणी साहित्य की विभिन्न विधाओं की पत्रिका है। इसके अलावा श्री तुकराम शेट *कोंकण टायम्स* और गोकुलदास प्रभु *ऋतु* नामक त्रैमासिक पत्रिका का संपादन नियमित रूप से कर रहे हैं। *कुळागर* जैत, शोध, उर्बा, बारदेश, चवथ, युवाकुंर आदि नियमित–अनियमित पत्रिकाएँ छप रही है।

पुरस्कार : मॅलवीन रॉड्रिग्ज को 2011 का साहित्य अकादमी, नई दिल्ली का पुरस्कार उनकी पुस्तक *प्रकृतीचो पास* काव्यसंग्रह के लिए प्रदान किया गया। युवा कथाकार प्रकाश पर्येकार को ग्रामीण विकास सांस्कृतिक संस्था, वाळपय हांचो सत्तरी अस्मिताय पुरस्कार, म्हादय काळजांतल्यान कागदार ह्या पुस्तक के लिए गुंडू सीताराम आमोणकार उत्कृष्ठताय पुरस्कार एवं कला एवं संस्कृति निदेशालय, गोवा सरकार का साहित्य 'युवा सृजन पुरस्कार' 2011 का दिया गया। 2 नवंबर 2011 को अस्मिताय प्रतिष्ठानाचो का डॉ. काशीनाथ महाले अस्मिताय पुरस्कार श्री राजदीप नायक और युवा अस्मिताय पुरस्कार श्री युगांक नायक को प्रदान किया गया। कला अकादमी का साहित्य पुरस्कार 10 अप्रैल 2011 को मुंबई के प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. अरुण टीकेकार के हाथों श्री परेश एन. कामत एवं श्रीमती राधा भावे को क्रमशः उनके कोंकणी और मराठी काव्यसंग्रह *शुभांकर* एवं *उमालताना* के लिए दिया गया।

अन्य गतिविधियाँ : कोंकणी भाषा और साहित्य के संवर्धन हेतु गोवा में कई संस्थाएँ कार्य कर रही हैं। यहाँ वर्ष 2011 में कोंकणी भाषा और साहित्य से संबंधित बहुत से आयोजन किए गए उनमें से कतिपय का उल्लेख किया जा रहा है। कला अकादमी गोवा ने माध्यमिक, उच्चतरमाध्यमिक

और महाविद्यालयीन स्तर के विद्यार्थियों के लिए 5 से 10 और 12 से 20 जनवरी 2011 के बीच कोंकणी और मराठी वार्षिक एकांकी प्रतियोगिता का आयोजन किया।

इंस्टिट्यूट मिनेझिस ब्रागांझा, पणजी ने 1 अगस्त 2011 को लोकमान्य तिलक की स्मृति में "राष्ट्रीयत्वाची भावना प्रभावी करपाक पत्रकारितेची भूमिका" विषय पर एक व्याख्यान का आयोजन किया। जिसमें प्रमुख वक्ता के रूप में मुंबई से श्री महेश ब. म्हात्रे को आमंत्रित किया गया। इस अवसर पर श्री प्रकाश कामत, श्री सीताराम टेंगसे और श्री एन. शिवदास ने चर्चा में भाग लिया। कोंकणी भाषा और संस्कृति प्रतिष्ठान एवं विश्व कोंकणी विद्यार्थी निधि के सौजन्य से इंजीनियर और मेडिकल के विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति डॉ. पी. दयानंद पई, अध्यक्ष, कोंकणी भाषा एवं संस्कृति प्रतिष्ठान की अध्यक्षता में श्री टी. वी. मोहंनदास पई, अध्यक्ष, मणिपाल विश्वविद्यालय द्वारा 26 अगस्त 2011 को प्रदान किया गया।

29 अक्तूबर 2011 को टी. बी. कुन्हा हॉल में श्री नागेश करमली की अध्यक्षता में थॉमस डिसौझा के काव्यसंग्रह *जाग* का लोकार्पण किया गया। साहित्य अकादमी, नई दिल्ली और कला अकादमी, गोवा के संयुक्त तत्वावधान में 29–30 अक्तूबर 2011 को "कोंकणी साहित्यांतलो छंद आनी वृत्त विचार" विषय पर परिसंवाद आयोजित किया गया। इसमें गोवा के कोंकणी रचनाकारों और प्राध्यापकों ने विभिन्न सत्रों में विभिन्न विषयों पर प्रपत्र प्रस्तुत किए और चर्चा में सहभागिता की। अखिल भारतीय कोंकणी परिषद एवं कोंकणी सेवा केंद्र, साखळी ने "कोंकणी लोककाणयांची तासां" विषय पर 27 नवंबर 2011 को श्री पुंडलीक नायक, अध्यक्ष गोवा कोंकणी अकादमी की अध्यक्षता में संगोष्ठी का आयोजन किया, जिसमें यहाँ के स्थानीय विद्वानों ने आलेख प्रस्तुत किए।

* * *